प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास : एक अध्ययन

डॉ. अशोक कुमार

मानव सभ्यता के विकास के साथ प्राचीन इतिहास का ज्ञान होता है। अतीत के छोर को छूती हुई जितनी दूर तक हमारी दृष्टि जाती है, युग युग की सांस्कृतिक परम्परा हमें दिखाई देती है। अति प्राचीन मानव ने अपनी भावनाओं को मूर्त करने से पहले प्रकृति की शाश्वत क्रीड़ा से भरपूर योग दिया था। सहस्त्राब्दियों तक वह अपने तरह–तरह के उद्वेगों और अन्तर्नुमूर्तियों को प्रकृति के महामहोत्सव में लय करता रहा। ईसा से सहस्त्रों वर्ष पहले ऐतिहासिक परम्परा इतनी अटूट अविच्छिन रही है कि प्रवाह पथ में अगणित प्रभावों को समेटती हुई वृहत् से वृहत्तर बनकर वह अग्रसर होती रही और विक्षेप उपस्थित हुए, तथापि उसका स्रोत कभी, सूखने नहीं पाया। अनेक धर्म और संस्कृतियाँ उसमें आत्मसात होती गईं और कभी उसका पाट इतना विस्तृत था कि आज उसके–छोर का अनुमान करना भी दुस्साध्य कार्य हो गया है।